(अव्यक्त इशारे)

खुशी के खजाने से सम्पन्न, खुशनसीब, खुशनुमा बनो

1) वर्तमान समय विश्व में सबसे ज्यादा खुशी की ही आवश्यकता है, आपके पास खुशी का खजाना भरपूर है। तो सदा खुशी में रहो और दूसरों को भी खुशी में रहने का साधन दो, इससे सभी आत्मायें आपको खुशी का देवता मानेंगी। "मैं खुशी का देवता हूँ"- सदा अपना यह टाइटिल स्मृति में रखना।

2) आपके पास सबसे बड़े से बड़ा खजाना खुशी का है, इस खुशी के खज़ाने का दान करते रहो। जिसको आप खुशी देंगे वह बार-बार आपको धन्यवाद देगा इसलिए महादानी बन खुशी का खज़ाना बांटो। रोज़ किसी न किसी को दान जरूर करो। दान करने से मन की प्रसन्नता व सन्तुष्टता का अनुभव करेंगे।

3) रूहानी शमा को वही परवाना पसन्द है जो खुशी में गाना और नाचना जानता है, इसके लिए जो मेरे-मेरे की लम्बी लिस्ट है - मेरा पोत्रा, मेरा धोत्रा, मेरा घर, मेरी बहू .. अब इसे समाप्त करो। अनेकों को भुलाकर एक बाप को याद करो तो मेहनत से छूट आराम से खुशी के झूले में झूलते रहेंगे।

4) जब किसी को कोई खजाना प्राप्त होता है या अचानक कोई को थोड़ा भी धन मिल जाता है तो खुशी में आ जाते हैं। आप बच्चों को तो ऐसा धन मिला है जो कभी भी कोई छीन नहीं सकता, लूट नहीं सकता। 21 पीढ़ी सदा धनवान रहेंगे। आपको सब खजानों की चाबी मिल गई, वह चाबी है "बाबा"। बाबा बोला और खजाना खुला, मालामाल हो गये, तो सदा इसी खुशी में भरपूर रहो।

5) कोई भी श्रेष्ठ कर्म करने से स्वयं के प्रति भी उसका प्रत्यक्षफल खुशी और शक्ति की अनुभूति होती है और दूसरे भी ऐसी श्रेष्ठ कर्मी आत्माओं को देख पुरुषार्थ के उमंग-उत्साह में आते हैं कि हम भी ऐसे बन सकते हैं। तो अपने प्रति प्रत्यक्षफल मिल जाता और दूसरों की भी सेवा हो जाती है।

6) अपने को कम्बाइण्ड समझकर हर कर्म करो, तो सदा शक्तिशाली रहेंगे और सदा अपने को रमणीक भी अनुभव करेंगे। किसी भी प्रकार का अकेलापन नहीं महसूस करेंगे क्योंकि भिन्न-भिन्न सम्बन्ध में साथ रहने वाले सदा रमणीक और खुशी का अनुभव करते हैं।

7) आपमें जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, ' निश्चय रखो क्योंकि आपका साथी मजबूत है इसलिए पार हो ही जायेंगे।

8) शरीर भल बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो, सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनों एक्सरसाइज़ हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों होने से सब सहज हो जायेगा।

9) तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए सोचो कम। अगर सोचना ही है तो ज्ञान रत्नों को सोचो। अगर यह भी सोचते हो कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं, अशरीरी होते नहीं, यह भी व्यर्थ संकल्प है। उसकी भेंट में समर्थ संकल्प करो, याद तो मेरा स्वधर्म है, ' ही कल्प-कल्प का सहजयोगी हूँ... इस प्रकार के संकल्प करो तो खुशी में उड़ते रहेंगे।

10) बलिहारी इस अन्तिम शरीर की, जो इस पुराने शरीर द्वारा जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया, ऐसे खुशी के संकल्प करो - वाह मेरा पुराना शरीर! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया। इसे वाह वाह कर चलाओ, तो कभी यह शरीर तंग नहीं करेगा।

11) इस अन्तिम जन्म में ब्राह्मण आत्माओं द्वारा भी सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्त होने हैं। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। तो घबराओ नहीं कि यह ब्राहमण परिवार में क्या होता है। यह भी हिसाब- किताब चुक्तू हो तरक्की हो रही है, इसी खुशी में रहो।

12) वायदा करो - छोटी-छोटी बातों में कभी कनफ्यूज़ नहीं होंगे, प्रॉबलम नहीं बनेंगे लेकिन प्राबलम को हल करने वाले बनेंगे। हम विश्व के मालिक के बालक हैं, इसी नशे में, खुशी में सदा नाचते रहो। बाप के हाथ में हाथ है, बाप के साथ खुशी में सारा समय नाचो।

13) बापदादा की कम्पनी और बापदादा के परिवार के हो। अभी और कहाँ क्लब आदि में जाने की आवश्यकता नहीं है। सदा चेहरे में ऐसी खुशी की झलक हो जो आपका चेयरफुल चेहरा बोर्ड का काम करे। इससे स्वतः एडवरटाइज हो जायेगी।

14) अपने सम्पन्न स्वरूप की स्टेज का अनुभव करो तो सदा खुशी में नाचते और बाप के गुण गाते रहेंगे। ऐसे खुशी में नाचते रहो जो आपको देखकर औरों का मन भी खुशी में नाचने लगे। जैसे स्थूल डाँस को देख दूसरे के अन्दर भी नाचने का उमंग उत्पन्न हो जाता है। ऐसे आप सभी सदा नाचते और गाते रहो।

15) मन की शक्ति का दर्पण चेहरा अर्थात् मुखड़ा है। खोया-खोया हुआ चेहरा और पाया हुआ चेहरा इसका अन्तर तो जानते हो। “पा लिया" इसी खुशी की चमक चेहरे से दिखाई दे। खुश्क चेहरा नहीं दिखाई दे, खुशी का चेहरा दिखाई दे तो अनेक आत्माओं की सेवा स्वतः होती रहेगी।

16) खुशनसीब उसे कहा जाता है जिसके जीवन में मुख्य प्राप्ति - श्रेष्ठ सम्बन्ध, श्रेष्ठ सम्पर्क, सच्चा स्नेह, सर्व प्रकार की सम्पत्ति और सफलता की हो। यह पांचों प्राप्तियां आप बच्चों

को हैं। आपका अविनाशी बाप के साथ सम्बन्ध और सम्पर्क है। सर्व सम्बन्धों का स्नेह भी एक से प्राप्त है और अविनाशी सम्पत्ति से भी भरपूर हो, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, तो इसी खुशनसीबी के नशे में रहो।

17) बापदादा आप खुशनसीब बच्चों की रोज़ माला सिमरते हैं। विजयमाला के मणके बनना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना, यही खुशनसीबी है। जैसे बापदादा सदा बड़ी दिल वाले बेहद की दिल वाले हैं, ऐसे आप बच्चे भी बेहद की दिल फ्राकदिल दातापन की दिल रखने वाले, सदा दिल खुश से जहान को खुश करने वाले खुशनसीब हो।

18) सारे विश्व के अन्दर सबसे श्रेष्ठ नसीब अर्थात् तकदीर हमारी है, हमारे जैसा खुशनसीब, खुशनुमा और कोई हो नहीं सकता। स्वयं भगवान ने हमें अपना बनाया है, इसी भाग्य का वर्णन करते सदा खुशी में नाचते रहो तो मेहनत से मुक्त, सदा रूहानी मौज की जीवन का अनुभव करते रहेंगे।

19) जब सुखदाता के बच्चे मास्टर बन गये तो दुःख तो आ नहीं सकता। दुःख का दरवाज़ा बन्द, स्वर्ग अर्थात् सुख का दरवाज़ा खुल गया। स्वर्ग की टिकेट ले ली है सदा खुशी में नाचते रहो, खुशी होगी तो दूसरे भी आपको देखकर खुश होंगे और बाप के समीप आयेंगे। आपकी खुशी बाप का परिचय देगी। कभी भी वियोग में नहीं आना, सदा योगी।

20) कितनी भी परिस्थितियां आवें, दुःख की अविद्या वाले हो। अपने सुख के सागर से प्राप्त हुए अधिकार द्वारा दुःख की परिस्थितियों में भी वाह मीठा ड्रामा ! वाह हरेक पार्टधारी का पार्ट! इस नॉलेज की रोशनी द्वारा, अधिकार की खुशी द्वारा दुःख को सुख में परिवर्तन कर दो। अधिकार से दुःख के अंधकार को परिवर्तन कर मास्टर सुखदाता बन स्वयं सुख के झूले में झूलते औरों को भी सुख के वायब्रेशन देने के निमित्त बनो।

21) जो भयभीत आत्मायें हैं उन्हों को शक्तिशाली बनाने वाली, दुःख के समय सुख देने वाली आत्मायें, सुखदाता के बच्चे हो। तो सदा सुख देने की श्रेष्ठ भावना रहे। कोई आत्मा भले आप से कैसा भी व्यवहार करे लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें सदा हरेक को खुशी दो। वह कांटा दे, आप बदले में रूहानी गुलाब दो। वह दुःख दे, आप सुखदाता के बच्चे सुख दो।

22) आप श्रेष्ठ आत्माओं के हर संकल्प में सर्व के कल्याण की, श्रेष्ठ परिवर्तन की, 'वशीभूत' से स्वतन्त्र बनाने की दिल की दुआयें वा खुशी की मुबारक सदा नैचुरल रूप में दिखाई दे क्योंकि आप सभी दाता अर्थात् देवता हो, देने वाले हो।

23) कभी भी, किसी भी बात में अगर माया से धोखा खाते हो तो धोखा खाने की निशानी है दुःख की लहर। जरा भी दुःख की लहर संकल्प में भी आती है तो जरूर कहाँ धोखा खाया है। तो चेक करो कि किस बात में धोखा मिला, क्यों दुःख की लहर आई ?

सुखदाता के बच्चे हो, तो स्वप्न भी सुख के आयें, खुशी के, सेवा के, मिलन मनाने के स्वप्न आयें। संस्कार भी बदल गये तो स्वप्न भी बदल गये।

24) आप सुख देखने, सुख देने वाले, सुखदाता के बच्चे सुख स्वरूप हो। कभी सुख के झूले में झूलो, कभी प्यार के झूले में झूलो, कभी शान्ति के झूले में झूलो। झूलते ही रहो। नीचे मिट्टी में पांव नहीं रखना, झूलते ही रहना।

25) हर संकल्प, हर बोल में विशेषता हो। सदा सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म हों, ऐसे सरल स्वरुप रहो। सदा एक की मत पर, एक से सर्व सम्बन्ध एक से सर्व प्राप्ति, ऐसे एक द्वारा सदा एकरस रहने के सहज अभ्यासी रहो। सदा खुश रहो, खुशी का खजाना बांटो। खुशी की लहर सर्व में फैलाओ, यही सच्ची सेवा है।

26) चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रूप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे - समान अनुभव होगा। भविष्य जन्म-जन्मान्तर कर्मभोग से मुक्त होने की खुशी इस कर्मभोग को चुक्त करने में औषधी का रूप बन जाती है। खुशी दवाई की खुराक बन जाती है।

27) विशेष रूप से अपनी मन्सा शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करते रहो। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न हो करके जाये। ऐसे अखण्ड महादानी बनो तब कहेंगे परोपकारी।

28) वर्तमान समय में सभी को अविनाशी खुशी की आवश्यकता है, सब खुशी के भिखारी हैं और आप दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चों का काम है-देना। जो भी सम्बन्ध- सम्पर्क में आये-खुशी बांटते जाओ, देते जाओ। कोई खाली नहीं जाये। इतना भरपूर बनो।

29) सदा उमंग-उत्साह में रहना अर्थात् अपने श्रेष्ठ शान वा स्वमान में रहना। सदा इसी शान में रहो कि हम सदा खुश रहने वाले और दूसरों को खुशी बांटने वाले दाता के बच्चे, सदा देने वाले, लेने वाले नहीं।

30) हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो - हर कर्म, हर संकल्प बधाई वाला हो। जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते रहना और सदा खुशी में मन से नाचते रहना और सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहना।

31) हमारी पालना करने वाला, पढ़ाई, श्रीमत और वरदान देने वाला, हर दिनचर्या में साथ निभाने वाला स्वयं परम आत्मा है, इस भाग्य को स्मृति में रख सदा खुशी में झूलते यही गीत गाते रहो- वाह मेरा भाग्य !